was not present in the meeting, nor was I and so we are on equal footing. We have carefully checked up reports from all the Members who were present and the leaders. Two Members were present on behalf of Mr. Vajpayee's party,—Mr Pitambar Das and Bhai Mahavir ji. Everybody knows that declaration or announcement—the text of it,—was gone through line by line, even certain changes were made by agreement and the whole thing was approved. Nobody objected to it. Mr. Vajpayee cannot come now and say this . . . .

MR SPEAKER: I think propriety demands that . . . .

SHRI S.M.BANERJEE (Kanpur): Something wrong in their leadership.

MR. SPEAKER: This should not have been brought. There may be many afterthoughts but this should not be brought here. I am not going to allow it. You can have it later on. I have another programme

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : मगर आप चर्चा का मौका तो दीजिये ।

12.39 hrs.

ANNOUNCEMENT RE. MEETING OF MEMBERS OF PARLIAMENT IN THE CENTRAL HALL TO FELICITATE THE PRIME MINISTER

MR. SPEAKER: I have a very good news that tomorrow at 4 O'clock, all of us, all sections of this House will felicitate the Prime Minister in the Central Hall and it will be my privilege—of course, I am not assuming it myself, but there was a suggestion of others also,—that I shall be presiding over it. Thereafter, because I shall be presiding over it willingly, I will be. At Home also to all the Members. I was thinking of going to my constituency and I hoped by that time I will give the news of ceasefire also. Most of the war was fought in my constituency, Amritsar district, during the last war and this war also. Because I do not speak in the House the Prime Minister should be very considerate to my constituency.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (Gwalior): Because of the war, the hon. Prime Minister cancelled the tour of my constituency. Let her visit my constituency.

MR. SPEAKER: I shall have to take him to the border areas so that he may change his views some time. Except a few districts we do need to carry all the Members to the border places so that they may know what a horrible thing it is to go to war.

12.40 hrs.

FREEDOM FIGHTERS (APPRECIATION OF SERVICES) BILL—*Contd.*

श्री परिपूर्णानन्द पैन्यूली : (टिहरी-गढ़वाल) : मैं निवेदन कर रहा था कि चूंकि 1972 में हम आजादी की सिल्वर जुबली मना रहे हैं इसलिये भारत सरकार को चाहिये कि 1972 में आजादी की लड़ाई लड़ने वाले सेनानियों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए, भारत सरकार कुछ ठोस कदम उठाए। एक सुझाव यह है कि भारत सरकार इन समस्त स्वतन्त्रता सेनानियों का हूज हू तैयार करे और उसको प्रकाशित करे ।

दूसरा सुझाव यह है कि जैसा कि पाणिग्रही जी ने सुझाव दिया है 1972 में कोई स्मारिका या उनका स्मारक स्थापित करने की दिशा में कदम उठाये जायें । प्रान्तों को भी उसे इस प्रकार की सलाह देनी चाहिये कि वे उन स्थानों पर जहां जहां स्वतन्त्रता संग्राम के लिए लड़ने वाले सेनानी रहे हैं, स्मारक बनायें ।

बहुत से लोग सूफी अम्बा प्रसाद को भूल गये होंगे वह ईरान में मरे थे । शायद मुरादाबाद में रहने वाले लोग भी उनको भूल गये होंगे । इसी प्रकार से भोपाल निवासी डा० बरकतुल्ला खान फ्रांसिस्को में मरे । उसी प्रकार से पेशावर के शेर अली को 1872 में लार्ड मयो को गोली मारने के अभियोग में फांसी दी गई थी । जलियांवाला कांड के माइकल ओडायर से बदला लेने के लिये ऊधम सिंह उर्फ राम मुहम्मद सिंह को लंदन में फांसी दी गई थी । राम बिहारी बोस ने लार्ड हार्डिंग पर 1912 में बम फेंका था और वही आई०एन०ए० के संस्थापकों में से थे । उनकी जापान में मृत्यु हुई ।

[श्री परिपूर्णानन्द पैन्यूली]

टिहरी जेल में श्री देव सुमन ने 84 दिन का अनशन किया था और उनका स्वर्गवास वहां हुआ था। वहां के राजा को निर्वासित किया गया लेकिन उनकी जेल में मरने वाले श्री सुमन के परिवार की जो आज हालत है, वह शायद किसी को ज्ञात नहीं है। मैडम कामा, खुदी राम बोस आदि कई और सेनानी हैं जिनके स्मारक बनाने की आवश्यकता है। उनकी स्मृति को चिर स्थायी बनाने के लिए यह चीज होनी चाहिये। इनके अलावा....

12.42 hrs.

ANNOUNCEMENT RE. SITTING OF THE HOUSE ON SATURDAY, DECEMBER 18, 1971.

MR. SPEAKER: Tomorrow, most of us are here. What if we sit tomorrow for two or three hours? If we sit for a few hours tomorrow also, we can have more time for discussion.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. SPEAKER: So I must say in advance that we shall be meeting tomorrow. What time shall we meet?

SHRI R. V. SWAMINATHAN (Madurai): We can meet between 2 and 4 p.m.

MR. SPEAKER: So, we shall be sitting tomorrow to avail of the time from 2 p.m to 4 p.m.

As for the business, the hon Minister has already announced the business, and the Order Paper will be circulated.

12.43 hrs.

FREEDOM FIGHTERS (APPRECIATION OF SERVICES) BILL—*Contd.*

श्री परिपूर्णानन्द पैन्यूली (टिहरी-गढ़वाल) : एक और सुझाव मैं देना चाहता हूं। स्वतन्त्रता सेनानियों की ओर हम न केवल आदर भाव दिखायें, उचित एलाउंस उनको दें बल्कि जितने भी हमारे नेशनल फैस्टिवल होते हैं जैसे 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि इन अवसरों पर जिला स्तर पर, प्रान्तीय स्तर पर और केंद्रीय स्तर पर विशेष अतिथि भी उनको हम बनायें, वी आई पीज की तरह हम उनको आमंत्रित करें और वह ट्रीटमेंट उनको दें।

उनके जो आश्रित हैं, उनके जो परिवार के लोग हैं, वे बहुत बुरी दशा में हैं। उनको नाममात्र की पैंशन प्रान्तीय सरकारें देती हैं। वे भी कभी कभी देती हैं। और कभी कभी नहीं देती हैं। चार छः महीने या साल दो साल बाद नहीं देती हैं। उनको उचित मात्रा में और रेग्युलरली और समय पर पैंशन मिलती रहनी चाहिये।

मैडिकल फेसिलिटीज भी उनको मिलनी चाहिये। बच्चों की शिक्षा की सुविधा होनी चाहिये। उनको वही सुविधाएं मिलनी चाहियें जो कि विधायकों को अथवा समद सदस्यों को आज प्राप्त है। ये बहुत छोटी बातें हैं और बहुत कम धनराशि की इनके लिए आवश्यकता है। किन्तु ऐसा करके हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता का भाव व्यक्त कर सकेंगे।

हम सिल्वर जुबली मनायेंगे तो यह सब स्वतन्त्रता सेनानियों, उनकी सेवाओं, उनके त्याग और तपस्या के प्रति हमारी कृतज्ञता का सूचक होगा।

इन शब्दों के साथ मैं बिल का समर्थन करता हूं और निवेदन करता हूं कि यदि सरकार कोई दूसरा बिल अगले सत्र में प्रस्तुत करने वाली है तो मेरी श्री लिम्बन लाल सक्सेना से प्रार्थना होगी कि वह अपने बिल को वापिस ले लें।

श्री रामसहाय पांडे (राजनदगांव) : इस विधेयक का मैं बड़े आदर के साथ समर्थन करता हूं।

श्री शशि भूषण (दक्षिण दिल्ली) : आप भी फीडम फाइटर रहे हैं। आप आसन ग्रहण करें।

अध्यक्ष महोदय: मैं इतनी देर बैठा रहा हूं। मैं रहा हूं, इसीलिए मैंने पहले समय इसके लिए बढ़ाया है।

12.46 hrs.

[SHRI N.K.P. SALVE *in the Chair*]

श्री रामसहाय पांडे : जब हम शहीदों का, सत्याग्रहियों का, जेल यातियों का जिन्होंने लाठियां खाईं, गोलियां खाईं, फांसी की टाप से रौंद गये, उनका स्मरण करते हैं, उनके प्रति आदर भाव और श्रद्धा का भाव प्रदर्शित करते हैं तो बहुत महत्व इस बात का नहीं होता